



International Journal of Engineering Research and Science & Technology

www.ijerst.org

ISSN : 2319-5991

Vol. 17 No. 4 (2021)



**ijerst.editor@gmail.com
editor@ijerst.com**

Research Paper

समकालीन उत्तर भारतीय चित्रकला के विकास में डॉ. रेखा निगम का योगदान: एक आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन

(दृश्य कला एवं समकालीन चित्रकला इतिहास)

कानपुर, उत्तर प्रदेश

डॉ. नीतू सैनी

सहायक आचार्य, भगवती एजुकेशन सेंटर डिग्री कॉलेज, मंथना, कानपुर नगर

प्रस्तावना (Introduction)

समकालीन भारतीय कला का इतिहास अत्यंत समृद्ध, विविधतापूर्ण और बहुआयामी रहा है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में भारतीय दृश्य कला (Visual Arts) ने अपनी पारंपरिक सीमाओं को तोड़कर एक नई वैश्विक पहचान स्थापित की है। कला के इस संक्रमणकालीन और विकासवादी युग में उत्तर प्रदेश की कलात्मक भूमि का अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विशेष रूप से औद्योगिक नगरी कानपुर और सांस्कृतिक केंद्र लखनऊ ने ऐसे अनेक कला मनीषियों, विचारकों और सर्जकों को जन्म दिया जिन्होंने अपनी कूची और कलात्मक सोच से न केवल प्रांतीय स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय पटल पर भी आधुनिक कला चेतना को एक नई दिशा प्रदान की। इन्हीं मूर्धन्य हस्ताक्षरों में डॉ. रेखा निगम का नाम अत्यंत आदर और गरिमा के साथ लिया जाता है। डॉ. रेखा निगम केवल एक असाधारण चित्रकार ही नहीं थीं, बल्कि वे एक दूरदर्शी शिक्षाविद्, गंभीर शोधकर्ता और कला की दार्शनिक व्याख्याता भी थीं। उनका पूरा जीवन कला की साधना, उसके अकादमिक सुदृढीकरण और भावी पीढ़ी के मार्गदर्शन में समर्पित रहा। उनका कलात्मक दृष्टिकोण यथार्थवाद की ठोस जमीन पर खड़ा होकर अमूर्तवाद के अनंत आकाश को छूने का प्रयास करता है।

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य डॉ. रेखा निगम के इसी बहुआयामी व्यक्तित्व, उनकी अद्वितीय कलात्मक शैली, उनके गंभीर तकनीकी प्रयोगों और समकालीन कला जगत में उनके संस्थागत व अकादमिक अवदान का एक विस्तृत, आलोचनात्मक तथा विश्लेषणात्मक मूल्यांकन करना है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखें तो कानपुर जैसी औद्योगिक नगरी में जहाँ मशीनों की गड़गड़ाहट और व्यापारिक सरगर्मियां मुख्य धारा में थीं, वहाँ कला और सौंदर्यशास्त्र की त्रिवेणी प्रवाहित करना कोई सुगम कार्य नहीं था। डॉ. रेखा निगम ने कानपुर को अपनी कर्मभूमि बनाया और वहाँ के सामाजिक, सांस्कृतिक और औद्योगिक परिवेश से उपजी मानवीय संवेदनाओं को अपने कैनवास पर जीवंत रूप में उतारा। उनका मानना था कि कला केवल बाह्य जगत की अनुकृति नहीं है, बल्कि वह आंतरिक मानस की गहन अनुभूतियों, सामाजिक अंतर्द्वंद्वों और मानवीय चेतना का एक दृश्य प्रतिमान है। उनके चित्रों में जहाँ एक ओर भारतीय समाज की परंपराएं, लोक जीवन के तत्व और पौराणिक आख्यानों की अंतर्निहित भावनाएं दिखाई देती हैं, वहीं दूसरी ओर आधुनिक जीवन की विसंगतियां, महानगरीय अकेलापन और नारी चेतना के स्वर भी अत्यंत प्रखरता के साथ उभरते हैं।

डॉ. रेखा निगम की कला यात्रा का अध्ययन इसलिए भी अपरिहार्य हो जाता है क्योंकि उनका कार्य अकादमिक शोध और व्यावहारिक सृजन के बीच एक सुदृढ़ पुल का निर्माण करता है। उन्होंने कला के सैद्धांतिक पक्षों—जैसे कि रूप, रंग, रेखा, तान और पोत (Texture)—का न केवल गहनता से अध्ययन किया, बल्कि उन्हें अपनी कलाकृतियों में अत्यंत सूक्ष्मता से प्रयुक्त भी किया। कला समीक्षा के क्षेत्र में उनका यह दृष्टिकोण एक नए प्रतिमान के रूप में स्वीकार किया गया है। उत्तर प्रदेश की समकालीन चित्रकला परंपरा में उनके स्थान को रेखांकित करते हुए कई समकालीन समीक्षकों ने माना है कि उनकी तूलिका में एक ऐसा अनूठा प्रवाह था जो जड़ वस्तुओं में भी प्राण फूंकने की क्षमता रखता था। उनके इस व्यापक प्रभाव को देखते हुए, वर्तमान समय में कला के नए शोधार्थियों के लिए उनके कला-दर्शन को समझना अत्यंत आवश्यक है। यह शोध पत्र उनकी प्रारंभिक कला यात्रा से लेकर उनके परिपक्व दौर की कृतियों, उनकी प्रदर्शनियों के इतिहास, कला दीर्घाओं में उनके प्रभाव और उनके अकादमिक अवदान को व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने का एक प्रामाणिक प्रयास है ताकि कला इतिहास के पन्नों में उनके योगदान को उसकी वास्तविक महत्ता के साथ दर्ज किया जा सके।

शोध के उद्देश्य एवं प्रासंगिकता (Objectives and Relevance)

किसी भी महान कलाकार के अवदान का मूल्यांकन तब तक अधूरा रहता है जब तक कि उसके कार्यों को निश्चित शोध प्रणालियों और उद्देश्यों के दायरे में रखकर न परखा जाए। डॉ. रेखा

निगम की कला और अकादमिक जीवन पर केंद्रित इस शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

उद्देश्य:-

- डॉ. रेखा निगम की प्रारंभिक कला यात्रा, उनके जीवन संघर्षों और उनकी कलात्मक अभिरुचि के विकास को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में रेखांकित करना।
- उनके द्वारा अपनाई गई विभिन्न कला विधाओं, जैसे कि तैल रंग (Oil Painting), जल रंग (Water Color), और मिश्रित माध्यम (Mixed Media) के तकनीकी पक्षों का सूक्ष्म विश्लेषण करना।
- जुहारी देवी गर्ल्स परास्नातक महाविद्यालय, कैनाल रोड, कानपुर के ललित कला विभाग में एक प्राध्यापिका और विभागाध्यक्ष के रूप में उनके संस्थागत योगदान तथा पाठ्यक्रम आधुनिकीकरण के प्रयासों का मूल्यांकन करना।
- उनकी कलाकृतियों में अंतर्निहित सामाजिक चेतना, नारीवादी दृष्टिकोण और लोक तत्वों के प्रतीकात्मक अर्थों को स्पष्ट करना।
- राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ तथा अन्य राष्ट्रीय कला दीर्घाओं में आयोजित उनकी प्रदर्शनियों के माध्यम से समकालीन कला परिदृश्य पर उनके प्रभाव का आकलन करना।

इस शोध की प्रासंगिकता इस तथ्य में निहित है कि वर्तमान डिजिटल और उत्तर-आधुनिक युग में जहाँ कला की पारंपरिक विधाएं और मानवीय स्पर्श धीरे-धीरे ओझल हो रहे हैं, वहाँ डॉ. रेखा निगम जैसी समर्पित कलाकार का जीवन और कला-दर्शन हमें जड़ों की ओर लौटने की प्रेरणा देता है। उत्तर प्रदेश के कला इतिहास में क्षेत्रीय कलाकारों पर अकादमिक सामग्री का अत्यंत अभाव रहा है। अधिकांश शोध कार्य राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कुछ गिने-चुने कलाकारों तक ही सीमित रह जाते हैं। ऐसे में कानपुर जैसे क्षेत्रीय कला केंद्र को समृद्ध करने वाले और स्थानीय प्रतिभाओं को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने वाले व्यक्तित्व पर किया गया यह अध्ययन कला इतिहास के इस खालीपन को भरने में एक मील का पत्थर साबित होगा। यह शोध न केवल कला के छात्रों के लिए एक संदर्भ ग्रंथ के रूप में कार्य करेगा बल्कि कला समीक्षकों को भी समकालीन उत्तर भारतीय कला के एक नए आयाम से परिचित कराएगा।

अकादमिक पृष्ठभूमि एवं संस्थागत योगदान (Academic Background and Institutional Contribution)

डॉ. रेखा निगम का व्यक्तित्व केवल कैनवास और रंगों तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उनका एक अत्यंत प्रखर और तेजस्वी रूप शिक्षा जगत में देखने को मिलता है। उन्होंने कला शिक्षा को केवल एक कौशल या हुनर के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे एक गंभीर दार्शनिक और बौद्धिक विधा के रूप में स्थापित किया। उनकी स्वयं की उच्च शिक्षा और कला सौंदर्यशास्त्र (Aesthetics) में डॉक्टरेट (Ph.D.) की उपाधि ने उनके व्यावहारिक सृजन को एक ठोस वैचारिक धरातल प्रदान किया। कला इतिहास की उनकी गहरी समझ और पश्चिमी व भारतीय कला सिद्धांतों के तुलनात्मक ज्ञान ने उन्हें अपने समय के अन्य कलाकारों से विशिष्ट और अग्रणी बना दिया।

जुहारी देवी गर्ल्स परास्नातक महाविद्यालय, कैनाल रोड, कानपुर संबद्ध- छत्रपति शाहू जी महाराज (CSJM) विश्वविद्यालय, कानपुर के ललित कला विभाग में उनके आगमन के साथ ही वहाँ एक नए युग का सूत्रपात हुआ। उन्होंने जब शिक्षण कार्य संभाला, तब क्षेत्रीय स्तर पर ललित कला की शिक्षा को बहुत अधिक व्यावसायिक या शोध-परक नहीं माना जाता था। डॉ. निगम ने इस धारणा को पूरी तरह से बदल दिया। उन्होंने विश्वविद्यालय के बोर्ड ऑफ स्टडीज (Board of Studies) के सक्रिय सदस्य और मार्गदर्शक के रूप में कला के पाठ्यक्रम को पूरी तरह से पुनर्गठित और आधुनिक बनाया। उन्होंने पारंपरिक भारतीय चित्रकला पद्धतियों (जैसे बंगाल शैली, मुगल और पहाड़ी लघुचित्र शैली) के संरक्षण के साथ-साथ समकालीन वैश्विक कला प्रवृत्तियों, जैसे कि क्यूबिज़्म (Abstract Cubism), अतियथार्थवाद (Surrealism) और आधुनिक डिजिटल मीडिया के तत्वों को पाठ्यक्रम में शामिल करवाया। उनका दृढ़ विश्वास था कि एक आधुनिक कला छात्र को अपनी जड़ों का ज्ञान होने के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर हो रहे बदलावों से भी पूरी तरह अवगत होना चाहिए।

एक शिक्षिका के रूप में डॉ. रेखा निगम की अध्यापन शैली अत्यंत व्यावहारिक, जीवंत और प्रेरणादायी थी। वे केवल क्लासरूम के ब्लैकबोर्ड या व्याख्यान तक सीमित नहीं रहती थीं, बल्कि स्वयं छात्रों के बीच बैठकर स्टूडियो में तूलिका पकड़ना सिखाती थीं। उन्होंने छात्रों में आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking) विकसित करने पर विशेष बल दिया। वे हमेशा कहती थीं, 'एक अच्छा चित्रकार वह नहीं है जो सुंदर चित्र बनाता है, बल्कि वह है जो अपने चित्र के माध्यम से दर्शक

को सोचने पर मजबूर कर देता है।' उन्होंने महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय में नियमित रूप से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के ख्यातिलब्ध कलाकारों, समीक्षकों और इतिहासकारों को आमंत्रित कर कार्यशालाओं (Workshops), स्लाइड शो और सेमिनारों का आयोजन कराया। इन आयोजनों के माध्यम से कानपुर के स्थानीय छात्रों को देश के बड़े कला केंद्रों (जैसे दिल्ली की त्रिवेणी कला संगम, मुंबई की जहांगीर आर्ट गैलरी या शांतिनिकेतन) के माहौल को समझने का सीधा अवसर मिला।

संस्थागत योगदान के अंतर्गत डॉ. रेखा निगम ने महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय में एक उच्च स्तरीय कला दीर्घा (Art Gallery) और एक समृद्ध कला पुस्तकालय की स्थापना में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका मानना था कि कला की पुस्तकें और पत्रिकाओं के बिना छात्रों का बौद्धिक विकास संभव नहीं है। उन्होंने स्वयं अपनी देखरेख में देश-विदेश की दुर्लभ कला पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं और प्रदर्शनियों के कैटलॉग को पुस्तकालय में संग्रहित करवाया। उनके अंतर्गत दर्जनों शोधार्थियों ने अपनी पी.एच.डी. (Ph.D.) की उपाधि पूरी की। एक शोध गाइड (Research Guide) के रूप में उनका दृष्टिकोण अत्यंत कड़ा और प्रामाणिक था। वे सतही शोध कार्य को कभी स्वीकार नहीं करती थीं। उन्होंने अपने छात्रों को लोक कलाओं के क्षेत्रीय सर्वेक्षण, लुप्त हो रही कला शैलियों के प्रलेखन (Documentation) और कला के सामाजिक प्रभावों जैसे मौलिक विषयों पर शोध करने के लिए प्रेरित किया। आज उनके द्वारा तैयार किए गए छात्र देश के विभिन्न प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों, कला महाविद्यालयों और व्यावसायिक कला क्षेत्रों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं और उनकी शैक्षणिक विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं।

महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय के दायित्वों से आगे बढ़कर उन्होंने कला को समाज से जोड़ने के लिए कई आउटरीच कार्यक्रम (Outreach Programs) भी शुरू किए। राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ के सहयोग से उन्होंने कानपुर और उसके आस-पास के ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों के बच्चों के लिए निशुल्क कला शिविरों का आयोजन किया। वे मानती थीं कि कला पर किसी एक विशिष्ट वर्ग का एकाधिकार नहीं होना चाहिए, बल्कि यह समाज के हर स्तर के व्यक्ति की अभिव्यक्ति का साधन बनना चाहिए। उनके इन प्रयासों ने कला शिक्षा को एक सामाजिक आंदोलन का रूप दे दिया। संस्थागत प्रशासनिक पदों पर रहते हुए भी उन्होंने अपनी कला साधना को कभी प्रभावित नहीं होने दिया। दिनभर के प्रशासनिक और शैक्षणिक कार्यों के बाद भी वे देर रात तक

अपने स्टूडियो में रंगों और कैनवास के साथ संवाद करती थीं। उनका यह समर्पण उनके सहकर्मियों और छात्रों के लिए हमेशा एक महान आदर्श बना रहा।

कलात्मक शैली, तकनीक एवं विषय-वस्तु (Artistic Style, Technique and Subject Matter)

डॉ. रेखा निगम की कलाकृतियों का यदि सूक्ष्मता से अवलोकन किया जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि उनकी कला शैली किसी एक संकीर्ण वाद या विचार की परिधि में बंधी हुई नहीं थी। उनकी कला निरंतर गतिशील और विकासशील रही, जिसे मुख्य रूप से तीन चरणों में विभाजित करके समझा जा सकता है। उनका प्रारंभिक दौर मुख्य रूप से रूपात्मक (Figurative) और यथार्थवादी (Realistic) था, जहाँ उन्होंने प्रकृति, मानव आकृतियों और अपने आस-पास के वातावरण को बहुत ही बारीकी और सजीवता से चित्रित किया। उनके इस दौर के चित्रों में रेखाओं का नियंत्रण और अकादमिक शुद्धता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। रंगों का चयन अत्यंत सौम्य और प्राकृतिक था, जिसमें मिट्टी के रंग (Earth tones), जैसे कि गेरू, सियाना और बर्न अम्बर की प्रधानता थी।

उनके कलात्मक विकास का दूसरा चरण अत्यंत महत्वपूर्ण है, जहाँ वे यथार्थवाद से अमूर्तवाद (Abstraction) की ओर बढ़ती दिखाई देती हैं। इस चरण में आकृतियों का सीधा रूप गायब होने लगता है और उसकी जगह रेखाओं के जाल, ज्यामितीय आकारों (Geometric Shapes) और रंगों के अनूठे विरोधाभासों (Color Contrasts) का जन्म होता है। इस दौर में उनकी तूलिका का संचालन (Brush Strokes) अत्यंत आक्रामक, स्वतंत्र और भावनात्मक रूप से तीव्र हो जाता है। उन्होंने रंगों को केवल कैनवास पर पोता नहीं, बल्कि रंगों के माध्यम से एक त्रि-आयामी प्रभाव (3D Effect) और एक विशिष्ट पोत (Texture) का निर्माण किया। इसके लिए उन्होंने चाकू (Palette Knife) का प्रचुर प्रयोग किया और कैनवास पर रंगों की मोटी परतें जमाकर एक ऐसा धरातल तैयार किया जिसे स्पर्श करके भी महसूस किया जा सकता था। उनकी इस तकनीक को कला समीक्षकों ने 'भावनात्मक अमूर्तता' (Emotional Abstraction) का नाम दिया।

तकनीकी स्तर पर डॉ. रेखा निगम ने अभूतपूर्व प्रयोग किए। वे किसी एक माध्यम तक सीमित नहीं रहीं। यद्यपि तेल रंग (Oil on Canvas) उनका सबसे प्रिय और सशक्त माध्यम था, क्योंकि यह उन्हें रंगों के मिश्रण और परतों के साथ खेलने की असीमित स्वतंत्रता देता था। तेल चित्रकला

में अपनी कलात्मक उत्कृष्टता के चरम पर पहुँचने के साथ धीरे रंगों की अपेक्षा-साथ उनका सृजन धीरे-रेखाओं की ओर उन्मुख होता गया। उनके प्रारंभिक चित्रों में विभिन्न रंगों का प्रयोग दिखाई देता है, जहाँ रंग और रेखाएँ मिलकर भावों एवं अनुभूतियों को अभिव्यक्त करते हैं। किंतु उनकी अंतिम कलाकृतियों में रंगों का प्रयोग लगभग समाप्त हो जाता है और श्वेत पटल पर केवल काली रेखाओं के सूक्ष्म एवं सशक्त संयोजन के माध्यम से उनकी कला अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करती है।

उनकी कलासाधना पर तत्कालीन प्रधानमंत्री एवं प्रख्यात कवि श्री अटल बिहारी- वाजपेयी जी की कविताओं का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। अटल जी की कविताओं ने उन्हें न केवल प्रेरित किया, बल्कि उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति को एक नई दिशा भी प्रदान की। उनकी अंतिम चित्रकृतियों में अटल जी की कविताओं के भाव, संवेदना और विचारों का अद्भुत दृश्यात्मक रूपांतरण देखने को मिलता है। श्वेत कागज पर अंकित काली रेखाएँ मात्र रेखाएँ नहीं रह जातीं, बल्कि वे कविता के प्रत्येक शब्द, भाव और अंतर्निहित संवेदना को दृश्य भाषा प्रदान करती हैं। कहीं रेखाओं की सरलता भावों की गहनता को व्यक्त करती है, तो कहीं उनका जटिल संयोजन कविता की अंतर्ध्वनियों को मूर्त रूप देता है। इस प्रकार उनकी अंतिम कलाकृतियाँ चित्र और कविता के अद्भुत समन्वय का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं, जहाँ शब्द दृश्य रूप धारण कर लेते हैं और रेखाएँ कविता की अनुभूति को साकार कर देती हैं।

यदि उनकी कलाकृतियों की विषय-वस्तु (Subject Matter) की बात करें, तो डॉ. रेखा निगम के चित्रों का मूल केंद्र बिंदु 'मानवीय संवेदना' और 'अस्तित्व का संघर्ष' है। उनके चित्रों में नारी आकृति का अंकन अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रतीकात्मक है। उनके चित्रों की महिलाएं केवल उपभोग या सौंदर्य की वस्तु नहीं हैं, बल्कि वे शक्ति, सहनशीलता, मौन अंतर्द्वंद्व और चेतना का प्रतीक हैं। उन्होंने नारी जीवन के विभिन्न रूपों—जैसे कि मातृत्व, अकेलापन, सामाजिक बंधन और इन बंधनों को तोड़कर उड़ने की छटपटाहट—को अत्यंत मार्मिक ढंग से उकेरा है। कई चित्रों में उन्होंने नारी आकृतियों की आँखों को अत्यंत बड़ा और गहरा बनाया है, जो बिना कुछ बोले ही दर्शक से संवाद करती हैं और समाज की विसंगतियों पर गहरे सवाल खड़े करती हैं।

नारी चेतना के साथ-साथ उनके चित्रों का एक बड़ा विषय 'प्रकृति और पर्यावरण' भी रहा है। लेकिन उनकी प्रकृति कोई शांत या रमणीय परिदृश्य (Landscape) नहीं है, बल्कि वह मानवीय हस्तक्षेप के कारण लहलुहान और संकटग्रस्त प्रकृति है। उन्होंने अपने अमूर्त चित्रों में गहरे लाल, काले और मटमैले रंगों के माध्यम से पर्यावरण क्षरण, पेड़ों की कटाई और कंक्रीट के जंगलों के बढ़ते प्रभाव पर अपनी गहरी चिंता व्यक्त की है। उनके चित्रों में अक्सर सूखे पेड़ की टहनियाँ, सूनी राहें और

ढहती हुई दीवारें दिखाई देती हैं, जो सीधे तौर पर आधुनिक सभ्यता के अंधाधुंध विकास और उसके कारण मानवीय मूल्यों के पतन की ओर इशारा करती हैं।

उनके चित्रों का एक और उल्लेखनीय पहलू 'लोक संस्कृति और लोक प्रतीकों' का समावेश है। उत्तर प्रदेश की समृद्ध लोक कला परंपरा, जैसे कि कोहबर, अल्पना और मांडना के पारंपरिक डिजाइनों को उन्होंने अपने आधुनिक अमूर्त चित्रों में बहुत ही कुशलता से शामिल किया। वे इन पारंपरिक आकारों को लेती थीं और उन्हें समकालीन कला की भाषा में ढालकर एक नया रूप प्रदान करती थीं। इस प्रकार, उनकी कला में परंपरा और आधुनिकता का एक ऐसा अनूठा और विरल संगम देखने को मिलता है जो समकालीन भारतीय कला जगत में अत्यंत दुर्लभ है। उनकी कृतियों का प्रत्येक तत्व—चाहे वह एक साधारण रेखा हो या रंग का एक छोटा सा धब्बा—पूर्णतः सोची-समझी कलात्मक योजना का हिस्सा होता था, जो उनके गहरे बौद्धिक और कलात्मक चिंतन का प्रमाण है।

प्रमुख प्रदर्शनियाँ, सम्मान एवं कला समीक्षकों की दृष्टि (Exhibitions, Awards and Critical Acclaim)

एक कलाकार की कलाकृति की वास्तविक परीक्षा तब होती है जब वह स्टूडियो की चारदीवारी से निकलकर सार्वजनिक दीर्घाओं (Art Galleries) में दर्शकों और समीक्षकों के सामने आती है। डॉ. रेखा निगम का प्रदर्शनी इतिहास अत्यंत समृद्ध और व्यापक रहा है। उन्होंने अपने जीवनकाल में देश के लगभग सभी प्रमुख कला केंद्रों में अपनी एकल (Solo) और सामूहिक (Group) प्रदर्शनियों के माध्यम से अपनी कला का लोहा मनवाया। कानपुर की ऐतिहासिक 'काला वीथिका' (Kala Veethika Gallery) में आयोजित उनकी प्रारंभिक प्रदर्शनियों ने ही स्थानीय कला प्रेमियों और समीक्षकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया था।

उनके कला जीवन का एक बड़ा मील का पत्थर राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ के साथ उनका जुड़ाव था। अकादमी की वार्षिक दीर्घाओं में उनकी कृतियों को हमेशा विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ। लखनऊ की दीर्घाओं में जब उनके अमूर्त चित्रों की प्रदर्शनी लगी, तो कला समीक्षकों ने उनकी तुलना देश के बड़े अमूर्त चित्रकारों जैसे वी.एस. गायतोंडे (V.S. Gaitonde) और एस.एच. रज़ा (S.H. Raza) की प्रारंभिक शैलियों से की। समीक्षकों का मानना था कि डॉ. निगम के रंगों का संयोजन और उनका संतुलन वैश्विक स्तर का है। इसके बाद उनकी कला यात्रा दिल्ली की

प्रसिद्ध 'ललित कला अकादमी' (National Academy of Art), राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय (NGMA), और मुंबई की 'जहांगीर आर्ट गैलरी' तक पहुँची। इन राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनियों ने उन्हें अखिल भारतीय स्तर पर एक स्थापित समकालीन कलाकार के रूप में मान्यता दिलाई।

डॉ. रेखा निगम को उनके उत्कृष्ट कलात्मक अवदान के लिए अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों और सम्मानों से नवाजा गया। उन्हें राज्य ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश द्वारा 'अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया, जो राज्य स्तर पर कला का सर्वोच्च सम्मान माना जाता है। इसके अतिरिक्त, उन्हें कई राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं द्वारा 'अखिल भारतीय कला पुरस्कार', 'कल्याणपुर कला रत्न' और शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए 'उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान' भी प्राप्त हुआ। परंतु, उनके लिए सबसे बड़ा सम्मान उनके चित्रों की वह सराहना थी जो देश के जाने-माने कला समीक्षकों ने प्रमुख राष्ट्रीय समाचार पत्रों और कला पत्रिकाओं (जैसे 'कला दीर्घा', 'ललित कला समकालीन') में लिखी। प्रसिद्ध कला समीक्षकों ने उनके चित्रों की समीक्षा करते हुए लिखा था कि डॉ. रेखा निगम की कला में उत्तर भारतीय मिट्टी की सौंदर्य महक के साथ-साथ आधुनिक वैश्विक चेतना का एक अत्यंत दुर्लभ और संतुलित समन्वय देखने को मिलता है। उनके निधन के उपरांत भी राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ और कानपुर के कला संगठनों द्वारा उनकी स्मृति में विशेष श्रद्धांजलि प्रदर्शनियों (Retrospective Exhibitions) का आयोजन किया गया, जो कला जगत में उनके स्थायी और अमिट प्रभाव को प्रमाणित करता है।

समकालीन उत्तर भारतीय कला पर प्रभाव एवं भावी शोध की दिशा

डॉ. रेखा निगम का अवदान केवल उनके जीवनकाल तक सीमित नहीं था, बल्कि उनका प्रभाव समकालीन उत्तर भारतीय कला परिदृश्य पर आज भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उन्होंने कानपुर जैसे एक शुद्ध औद्योगिक शहर में कला की जो अलख जगाई, उसने आने वाली कई पीढ़ियों को कलाकार बनने की प्रेरणा दी। उनसे पहले, कानपुर से निकलने वाले कला के छात्रों को अपनी पहचान बनाने के लिए अनिवार्य रूप से दिल्ली, मुंबई या लखनऊ जैसे बड़े शहरों की ओर पलायन करना पड़ता था लेकिन डॉ. निगम ने अपनी शैक्षणिक नीतियों और व्यक्तिगत कलात्मक कद के बल पर कानपुर को ही एक महत्वपूर्ण कला केंद्र के रूप में स्थापित कर दिया। आज कानपुर और आस-पास के क्षेत्रों में सक्रिय दर्जनों युवा चित्रकार उनकी शैली, तकनीक और उनके विचारों से गहराई से प्रभावित हैं।

उनके कार्यों ने कला इतिहास के क्षेत्र में शोध के नए द्वार खोले हैं। वर्तमान समय में दृश्य कला (Visual Arts) के क्षेत्र में अनुसंधान का दायरा बहुत व्यापक हो चुका है। डॉ. रेखा निगम की कलाकृतियाँ और उनका दर्शन भावी शोधार्थियों के लिए अध्ययन का एक अत्यंत समृद्ध और अच्छा विषय हैं। उन पर भविष्य में कई महत्वपूर्ण दिशाओं में शोध कार्य किया जा सकता है। उदाहरण के लिए: 'डॉ. रेखा निगम के चित्रों में नारी चेतना और सामाजिक सरोकार', 'उनकी अमूर्त कला में प्रयुक्त स्वदेशी पोत (Texture) और मिश्रित माध्यमों का तकनीकी मूल्यांकन', या 'उत्तर प्रदेश की समकालीन कला शिक्षा के विकास में डॉ. रेखा निगम की संस्थागत भूमिका'। इस प्रकार के शोध कार्य न केवल उनके योगदान को और अधिक गहराई से स्थापित करेंगे, बल्कि भारतीय कला इतिहास लेखन (Art Historiography) को भी एक नई दृष्टि प्रदान करेंगे।

विशेष:

तकनीकी विधा एवं तूलिका संचालन का सूक्ष्म विश्लेषण

डॉ. रेखा निगम की तकनीकी दक्षता का मूल्यांकन करने के लिए उनके द्वारा प्रयुक्त 'इम्पैस्टो' (Impasto) तकनीक का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है। इम्पैस्टो वह पद्धति है जिसमें रंग को बिना किसी पतले घोल (Thinner/Linseed Oil) के सीधे ट्यूब से निकालकर कैनवास पर मोटे रूप में लगाया जाता है। डॉ. निगम ने इस तकनीक का उपयोग अपने अमूर्त चित्रों में धरातलीय गत्यात्मकता उत्पन्न करने के लिए किया। जब प्रकाश इन मोटे रंगों पर पड़ता है, तो वह एक प्राकृतिक छाया (Natural Shadow) निर्मित करता है, जिससे चित्र में समय और प्रकाश के बदलने के साथ-साथ नए शेड्स दिखाई देते हैं।

उनके तूलिका संचालन (Brushwork) में एक प्रकार का सूफीयाना फक्कड़पन और दार्शनिक ठहराव दोनों एक साथ दिखाई देते हैं। वे फ्लैट ब्रश (Flat Brushes) और हॉग हेयर ब्रश (Hog Hair Brushes) का अधिक प्रयोग करती थीं, जो कैनवास पर मोटे और लंबे स्ट्रोक लगाने में सहायक होते हैं। उनके चित्रों में कहीं-कहीं रंगों को जानबूझकर बहने दिया गया है (Dripping Technique), जो जीवन की अनियंत्रित और आकस्मिक घटनाओं का प्रतीक माना जा सकता है। रंगों का यह बहाव दर्शक को यह अहसास कराता है कि कलाकृति स्थिर नहीं है, बल्कि वह समय के साथ प्रवाहित हो रही है।

डॉ. रेखा निगम के चित्रों में प्रयुक्त रंग-योजना और प्रतीकवाद

रंग मनोविज्ञान (Color Psychology) के दृष्टिकोण से डॉ. रेखा निगम की रंग-योजना अत्यंत जटिल और विचारोत्तेजक है। उनके चित्रों में नीले और धूसर (Blue and Grey) रंगों का समन्वय अक्सर अकेलापन, अवसाद और महानगरीय शून्यता को दर्शाता है। इसके विपरीत, जहाँ उन्होंने नारी शक्ति और सामाजिक विद्रोह को चित्रित किया है, वहाँ चटक लाल (Crimson Red), सिंदूरी और गहरे पीले रंगों का विस्फोटक प्रयोग देखने को मिलता है। ये रंग ऊर्जा, जीवन शक्ति और क्रांति के सूचक हैं।

उनके चित्रों में प्रयुक्त प्रतीकों (Symbols) में 'सूनी खिड़की', 'टूटा हुआ पिंजरा', 'अंधेरे में जलता दीपक' और 'त्रिकोणीय ज्यामितीय आकृतियाँ' बार-बार उभरती हैं। सूनी खिड़की बाहरी दुनिया से संपर्क टूटने और आंतरिक एकांत का प्रतीक है, जबकि टूटा हुआ पिंजरा नारी की मुक्ति और बंधनों से स्वतंत्रता की घोषणा करता है। त्रिकोणीय आकृतियों के माध्यम से उन्होंने स्थिरता और गतिशीलता के बीच के तनाव को दर्शाया है। ये सभी प्रतीक उनकी कला को केवल एक दृश्य वस्तु न बनाकर एक वैचारिक विमर्श (Conceptual Discourse) में बदल देते हैं।

उपसंहार (Conclusion)

निष्कर्षतः, यह कहा जा सकता है कि डॉ. रेखा निगम का जीवन और उनकी कला समकालीन भारतीय चित्रकला के इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है। वे एक ऐसी असाधारण विभूति थीं जिन्होंने कला के सृजन (Creation) और शिक्षा (Education) दोनों ही क्षेत्रों में समान रूप से शीर्ष स्थान प्राप्त किया। उनका कैनवास केवल रंगों का खेल नहीं था, बल्कि वह मानवीय आत्मा की गहराइयों, नारी मन के द्वंद्वों और हमारे सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश का एक प्रामाणिक दर्पण था। उनकी तकनीकी प्रयोगधर्मिता, चाहे वह तैल रंगों की परतें हों या मिश्रित माध्यमों का नवोन्मेष, उनके साहसी और लीक से हटकर सोचने वाले व्यक्तित्व को दर्शाती है।

जुहारी देवी गर्ल्स परास्नातक महाविद्यालय, कैनाल रोड, कानपुर तथा छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर (कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर) में उनके द्वारा किए गए संस्थागत सुधार और छात्रों के प्रति उनका निस्वार्थ समर्पण उन्हें एक महान युगप्रवर्तक शिक्षिका के रूप में स्थापित करता है। उन्होंने कला को अकादमिक अनुशासन और सामाजिक सरोकारों से जोड़कर

एक नया प्रतिमान स्थापित किया। यद्यपि आज वे शारीरिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी कलाकृतियाँ, उनके द्वारा स्थापित शैक्षणिक मानक और उनके सैकड़ों सफल छात्र उनकी जीवंत विरासत (Living Legacy) के रूप में देश-विदेश में उनका नाम रोशन कर रहे हैं। राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ और कानपुर की कला वीथिका में सुरक्षित उनके चित्र आज भी दर्शकों को मौन रहकर बहुत कुछ सोचने पर विवश करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र उनके इसी अद्वितीय अवदान को सादर नमन करते हुए कला जगत में उनके स्थान को अक्षुण्ण बनाए रखने की एक विनम्र अकादमिक चेष्टा है।

संदर्भ सूची (References)

1. निगम, रेखा (2022). 'समकालीन कला और सौंदर्यशास्त्र के बदलते आयाम', उत्तर प्रदेश कला प्रकाशन, लखनऊ।
2. शर्मा, आनंद (2012). 'उत्तर प्रदेश के आधुनिक और समकालीन चित्रकार', ललित कला विधा संस्थान, नई दिल्ली।
3. श्रीवास्तव, के.एम. (2015). 'कानपुर की कला और औद्योगिक संस्कृति का अंतर्संबंध', अकादमिक जर्नल ऑफ विजुअल आर्ट्स, वॉल्यूम 4, अंक 2, पृष्ठ 45-60
4. राज्य ललित कला अकादमी (2018). 'डॉ. रेखा निगम: एक संस्मरण और कलात्मक मूल्यांकन' (प्रदर्शनी कैटलॉग), लखनऊ।
5. द्विवेदी, राकेश (2020). 'भारतीय अमूर्त चित्रकला की विकास यात्रा और क्षेत्रीय प्रभाव', कला दीर्घा पत्रिका, अंक ३२, पृष्ठ १२-२५।
6. छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर (2016). 'ललित कला विभाग के ऐतिहासिक अभिलेख एवं बोर्ड ऑफ स्टडीज की रिपोर्ट', विश्वविद्यालय प्रेस।
7. कुमार, सतीश (2021). 'समकालीन उत्तर भारतीय नारीवादी चित्रकला और डॉ. रेखा निगम का योगदान', पी.एच.डी. शोध प्रबंध, काशी हिंदू विश्वविद्यालय (BHU), वाराणसी।